

000 000, 000 000000

“00 000 000 0000 000 00 00 00 000000 000 000000 000000 000 00 000 ; 00000, 00 00 00 00 00 000” (2000000000000 5:17)

जिन्हीं नदी के किनारे पर मनुष्य य अक्षर सर नवीनता और परिवर्तन चाहता है ज़रूरी नहीं कि हर परिवेश में यह अच्छा ही हो, किन्तु नये वर्ष में अक्षर सर इस तरह की चर्चा होती है, संदेश होते हैं मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि स्वस्थ मानसिकता व प्रसन्नता के लिए आम जीवन की दिनचर्या और रोजमर्रा की जिन्दगी में कुछ न कुछ परिवर्तन होना अच्छा होता है इसी वजह से जो व्यक्ति स्वस्थ और सम्पूर्ण न लोग होते हैं, अक्षर सर गर्मी की छुट्टियों में पहाड़ों पर चले जाते हैं, पर्यटन के स्थानों में जाकर कभी न और तनावरहित वातावरण में अपना समय गुज़ारते हैं

प्रभु यीशु मसीह ने सदैव आंतरिक परिवर्तन और आत्मिक नवीनता की बात कही है संसार बाह्य अस्तित्व को देखता है किन्तु परमेश्वर हृदय को जानता है संसार की नज़र भौतिक वस्तुओं पर जाती है कि फलाने व्यक्ति कैसे दिखता है, कैसे कपड़े पहनता है, किस तरह के घर में रहता है, किन-किन सी उपलब्धियाँ प्राप्त हैं इत्यादि-इत्यादि यानी ये बातें प्रमुख हो सकती हैं किन्तु प्राथमिक नहीं प्राथमिक तो वही है, जो ईश्वर की दृष्टि में महत्वपूर्ण है

जीवन के प्रमुखतम- आधारभूत-ईश्वर प्रदत्त नयियों में से कौन-कौन सी बातें जो हमें सीखना है कि हमारी उपलब्धियों, पदों और सोशल स्टेटस से बढ़कर प्रमुख बात यह है कि हम कौन हैं

हमें भी अपने जीवन में नवीनता लाना है और परिवर्तन करना है, किन्तु यह किसी भौतिक उपलब्धि से नहीं होगा वरन् जीवन में नवीनता और परिवर्तन आने का, प्रभु यीशु मसीह की शिक्षाओं के जीवन में समाहित करने से, आत्मिकता के अपने व्यवहार में उतारने से और अपने जीवन की बुराइयों को स्वीकार कर परमेश्वर के वचन से; उनकी प्रतिक्रिया स्वीकार करने से इस आने वाले वर्ष में हमारे जीवन में भी ऐसी मसीही साक्षी हो कि लोग हमारे जीवन से प्रभु को देख सकें

0000000000 :- यति परमेश्वर, हमें ऐसी समझ दे कि इस आने वाले वर्ष में अपने जीवन की प्राथमिकताओं को समझने वाले हों और तेरे वचन के अनुसार जीवन जीने वाले हों आमीन